जनगर्जन

वर्ष 24 अंक 5 मासिक नई दिल्ली जनवरी 2010 विक्रमी संवत्-2066 प्रधान संपादकः देवब्रत बिश्वास, वार्षिक-शुल्कः 60रुपये

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जन्म दिवस की पुकार : देशभक्ति भावना जगाएं

देवब्रत बिश्वास, महासचिव, अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक

वर्तमान में देश जिस मोड़ पर खड़ा है, ऐसे में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आज देश की समृद्धि और खुशहाली के लिये एक सूत्र में बाँधे रखना आवश्यक है। जिसके लिये देश की जनता में देश भक्ति की भावना को जागृत करना नितांत ही आवश्यक है। भारत की समृद्धि और खुशहाली के लिये सैकड़ों देशभक्तों ने सपना देखा था और इसके लिये उन्होंने अपने प्राणों की आहुति तक दे डाली। लेकिन आजादी के छः दशक बीत जाने के बाद भी देश की 25 प्रतिशत जनता शिक्षा से वंचित है और लाखों युवक बेरोजगार है, सांप्रदायिक और आतंकवादी संगठनों के बढ़ते आक्रमण से धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, गरीबों और आम जनता में निराशा की अस्वस्थ भावना अपनी पैठ बना रही है। वर्तमान समय में घोर अन्याय हमारे समाज की विशेषता बन गयी है, जहाँ देश की 77 प्रतिशत जनता 20 रुपये प्रतिदिन की आय पर जीवन बिताने के लिये मजबूर है तो वहीं मुट्ठी भर लोग अरबपतियों की सूची में शामिल हो गये है जो दुनिया के दस बड़े अरबपतियों में अपना नाम शामिल कराने के लिये प्रयासरत है। देश की जनता और युवा इस तरह की असमानता और अन्यायपूर्ण परिस्थिति में, घबराये हुये है और निराश है, जिसके कारण ये अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाने और राष्ट्र को अपनी सेवायें देने के लिये कड़ी मेहनत की नहीं सोच सकते। इस प्रकार की हताशापूर्ण एवं उदासी के क्षणों में एकमात्र नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का आदर्श एवं संघर्ष ही लोगों को अन्याय और शोषण के खिलाफ संघर्ष के लिये प्रेरित कर सकता है, इसके साथ-साथ जनहित में कार्य करने तथा राष्ट्रहित में कार्य करने के लिये भी प्रेरणा मिलेगी, तथा देश की खुशहाली के लिये त्याग की भावना जागेगी।

नेताजी एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जो लोगों से देश के प्रति बलिदान के लिये कह सकते थे, क्योंकि उन्होंने स्वयं ही देश के प्रति बलिदान और आत्मसमर्पण का एक महान उदाहरण पेश किया था। उनकी देशभक्ति और देशवासियों के स्नेह हमारे देश की आजादी की लड़ाई के इतिहास में असमांतर है। किसी भी प्रकार का उच्च पद और दुनिया के किसी भी तरह के सुख का प्रलोभन, जो किसी बड़े नेता को चाहिये, सुभाष के देश भक्ति के रास्ते पर बढ़ते कदम को रोक नहीं सकी और देश छोड़कर चले गये, जहाँ उन्हें काफी पीड़ा, अनिश्चितता, खतरों, और जीवन की कठिनाइयों को सहते रहे। अत: वह सही मायने में 'देशभक्तों के देशभक्त' थे, उनके अलावा ऐसा व्यक्तित्व गाँधी जी या अन्य किसी में भी नहीं था। उनके जन्म दिन को 'देश प्रेम दिवस' के रूप में मनाते हुये, वर्तमान में लुप्त हो चुकी देशभक्ति की भावना को पुन: जागृत कर सकते है। हमारे आजादी के परवानों ने जो देशभक्ति से विभोर, बलशाली, खुशहाल और संपन्न भारत का सपना देखा था वह सिफ देशभक्ति की भावना के साथ एकजुट संघर्ष करने से ही आ सकती है।

नेताजी के जन्म दिवस को 'देश प्रेम दिवस' की घोषणा के लिये चारों प्रमुख वामपंथी दलों का एकजुट होकर एक स्वर में मांग करने से, इस लक्ष्य को काफी प्रोत्साहन मिला है। मैं सभी प्रगतिशील धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक पार्टियों से अपील करता हूँ कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के 114 वें जन्मदिवस 23 जनवरी 2010 पर सर्वोच्च श्रद्धांजलि देने के लिये आगे आकर सामूहिक रूप से इस मांग के लिये आवाज उठाये।

कृषि में निराशाजनक प्रदर्शन

एक बार पुन: सिद्ध हो गया कि कृषि क्षेत्र में निराशाजनक प्रदर्शन से कीमतें बढ़ी है और खाद्यान्न संकट उत्पन्न हो गया है। इस परिस्थिति को सुधारने के लिये केन्द्र सरकार कुछ भी कदम नहीं उठा रही है, यह अपने आप में एक बहुत ही बड़ा चिन्ता का विषय बन गया है। यहाँ तक कि केन्द्रीय वित्त मंत्री ने चेतावनी देते हुये कहा है कि सकल घरेलु उत्पाद में आशाजनित विकास के मार्ग में कृषि क्षेत्र ही बाधक बनकर सामने आया है। कृषि क्षेत्र में वर्तमान वित्तीय वर्ष के प्रथम तिमाही में 4 प्रतिशत की न्यूनतम विकास दर का लक्ष्य था, जो केवल 2.5 प्रतिशत ही रह पाया और अगले तिमाही में लक्ष्य से एक प्रतिशत कम विकास दर रहा। यह आकलन किया गया है कि इसी वित्तीय वर्ष की तीसरे तिमाही दौर में विकास ऋणात्मक हो जायेगा। कृषि उत्पाद में आई इस गिरावट

से नि:संदेह खाद्य वस्तुओं में तीव्र महँगाई उत्पन्न हुई है, जिससे महँगाई ने दिसम्बर 2009 के अन्त तक 20 प्रतिशत का स्तर प्राप्त कर लिया था।

अधिकांश खाद्यान्नों और अन्य खाद्य वस्तुओं के मूल्यों में औसतन 40 से 100 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। हाल ही में, चीनी के मूल्यों में अपने सभी समय के रिकार्डों को तोड़ दिया। जबकि ऐसे हालात में सरकार अभी भी मूक दर्शक बनी हुई है और कृषि मंत्री उत्पादन में आई गिरावट के सांख्यिकीय आंकड़ें तैयार करने में व्यस्त है और 10 लाख टन की गिरावट की आशंका जतायी है।

परन्तु आंकड़ों के इस खेल से जब तक सरकार खाद्यान्न और अन्य मूलभूत वस्तुओं के वायदा कारोबार पर अंकुश लगाने की जिम्मेवारी से बचती रहेगी और जमाखोरों और मुनाफाखोरों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही नहीं करेगी तब तक इस समस्या का निदान नहीं हो सकता। इसके अलावा कृषि उत्पाद में आई गिरावट ने इस समस्या को और भी जटिल बना दिया है। केन्द्र सरकार इसके लिये राज्यों को जिम्मेवार ठहराती है और सार्वजनिक वितरण प्रणाली, जिसके 2,60,000 दुकानें है, को मजबूत और सुचारू रूप से संचालित करने के लिये प्रभावकारी कदम उठाने से कतरा रही हैं। क्योंकि इनमें से अधिकांश दुकानें प्रभावहीन है। यदि केन्द्र सरकार खाद्य वस्तुओं में राज्यों को राहत प्रदान करने की जिम्मेवारी से बचती रहेगी तो 'आम आदमी' इस बढ़ती तीव्र महँगाई से भूखमरी की कगार पहुँचने को बाध्य है।

इन क्षेत्रों में केन्द्र की विफलता से सरकार की कृषि क्षेत्र में विफलता अवश्यंभावी है। मूलभूत आवश्यक वस्तुएं कृषि क्षेत्र के उच्च विकास से संबंधित है। इसलिये यह आवश्यक है कि कृषि उत्पाद में वृद्धि के लिये सभी कदम उठाये जायें और कृषि में सार्वजनिक निवेश में वृद्धि की जाये। परन्तु केन्द्र सरकार यह सभी कार्य करने में पूरी तरह से असफल रही है। कृषि क्षेत्र में ऊपजे संकट से खाद्य सुरक्षा को भय उत्पन्न हुआ है, इसके साथ-साथ लाखों गरीब किसानों, जो हमारी पूरी आबादी का 70 फीसदी है, की आजीविका पर गहरा संकट मंडराने लगा है।

अत:, इस प्रकार से कृषि क्षेत्र की उपेक्षा एक अक्षम्य अपराध है, जिससे उत्पाद में गिरावट आई और कीमतें चढ़ने लगी, गरीब जनता भूखमरी का शिकार होने लगी तथा असहाय हजारों किसानों ने दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से आत्म हत्यायें की। यह केवल कृषि मंत्रालय की विफलता नहीं है बल्कि संप्रग सरकार की विफलता भी है।

कोपहेगन जलवायु सम्मेलन-शोरगुल एक छलावा और कुछ नहीं

साथी एन.वेलप्पन नायर, अध्यक्ष अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक

तेजी से बदलते जलवायु की परिस्थितियों की वजह से पूरी दुनिया एक बेहद गंभीर संकट को झेल रही है। उच्च विकसित औद्योगिक पूँजीवादी मुल्कों के उद्योगों और गगनचूंबी औद्योगिक संस्थानों से निकलने वाले कार्बन डाई आक्साइड और जहरीली गैसों के उत्सर्जन से पूरी दुनिया को 'ग्लोबल वार्मिंग' के दुष्परिणामों को भोगना पड़ रहा है। ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों और पर्यावरण शास्त्रियों ने इससे होने वाले खतरनाक नतीजों से आगाह किया है। इन विद्वानों ने अनेक खतरे बताये जिनमें यह भी बताया है कि विश्व का औसतन तापमान 2°सै. बढ़ने से चाय, कॉफी, मसाले, रबर और अन्य कृषि उत्पाद से जुड़े फसलों पर बेहद प्रतिकूल असर पड़ेगा और उनकी पर्यावरण परिवर्तन भीषण नतीजे देगा।

खाद्यान्न की सुरक्षा, जल की सुरक्षा प्रक्रिण्या नष्ट होगी। तटीय लोगों का जीवन और जीविका के साथ-साथ विशाल आबादी की जीवन तबाह हो जायेगी। इन कारणों को ध्यान में रखकर ही विद्वानों ने समय रहते प्रभावकारी कदम उठाकर ग्लोबल वार्मिंग से निपटने की आवश्यकता पर चेतावली देते रहते हैं। ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के उच्च स्तरीय, पारदर्शी, संतुलित कदम प्रभावकारी ढंग से उठाये जायेंगे, ऐसी विशिष्ट घोषणा इस कोपहेगन सम्मेलन में पहले से ही घोषित किया गया था। परंतु इसके विपरित यह सम्मेलन फिसड्डी साबित हुआ। कुछ भी उल्लेखनीय तथ्य इस सम्मेलन से प्राप्त नहीं हुआ। विश्वस्तरीय सभी नेता जो सामान्यतया उक्त सम्मेलन में कुछ नतीजे पर पहुँचने के लिये जमा हुये थे वे सभी बिन्दुओं पर असहमत ही रहे और बड़े देशों के बड़े नेता इस संदर्भ में न्यायपूर्ण तरीके से कार्बनडाईआक्साईड और अन्य गैसों के उत्सर्जन के किसी सर्वमान्य बाध्यकारी उत्सर्जन सीमा को तय कर घोषित करने में असमर्थ रहे। हर किसी को आश्चर्य तब हुआ जब सम्मेलन की इस हास्यापद दशा में अफ्रीकी देशों ने तीव्र विरोध कर यह सम्मेलन का बहिष्कार किया। इस तरह यह सम्मेलन इस उल्लेख के बाद की सभी ने भाग लिया के उपरान्त समाप्त हो गया।

यह स्पष्ट हो गया कि समानता और वास्तविकता के स्तर पर कोपहेगन सम्मेलन ग्लोबल वार्मिंग से निपटने में विफल हो गया। सम्मेलन में समझौता इस बिन्दु को लेकर नहीं हो सका की कोई देश कार्बनडाईआक्साईड के उत्सर्जन की सीमा क्या रखेगा, बल्कि इस बिंदु पर समाप्त हुआ कि प्रमुख औद्योगिक देशों के द्वारा स्वीकृत किये गये तथ्य कि विश्व का तापमान रूकना चाहिये, इस बात के साथ समाप्त हो गया। इस विषय पर भारत सरकार का स्वेच्छा से घोषित 20-25 प्रतिशत उत्सर्जन 15 वर्षों में कम करने का तथ्य निरर्थक साबित हुआ। विश्व स्तर के बड़े नेता, जो एकत्रित हुये

थे, उन्होंने बहुत धूर्तता पूर्वक विकासशील देशों पर उत्सर्जन की सीमा थोपने और स्वयं अपने विकसित देशों के लिये उत्सर्जन की कटौती जैसा कोई तथ्य सामने नहीं लाने का मसविदा तैयार करने की कोशिश की। इस तरह इन बड़े नेताओं के एकत्रित होने के बावजूद भी कोई नतीजा नहीं निकला और कोई प्रभावकारी समानता पर आधारित पर्यावरण परिवर्तन के संदर्भ में समझौता नहीं हो सका। इस तरह यह सिद्ध होता है कि गरीब अविकसित देशों के ऊपर इस विषय पर अमेरिका पूर्व नियोजित साजिश के तहत योजनायें बना रहा था और अमेरिकी दबाव का शिकार बनाना चाहता था।

जैसा कि स्पष्ट है कि जलवायु परिवर्तन का सबसे अधिक प्रभाव किसानों पर पड़ता है, ऐसे में कृषि प्रधान देश भारत को विकसित औद्योगिक देशों के दबाव में आने की जरूरत नहीं है। इन विकसित औद्योगिक देशों का यह प्रयास रहता है कि विकासशील और अविकसित देशों के ऊपर उत्सर्जन की कटौती का अमेरिकी दबाव डाला जाये। इस तरह भारत को एक सैद्धांतिक, स्वतंत्र और प्रायोगिक पक्ष लेकर विश्व की इस समस्या के निदान के लिये आगे आना चाहिये तथा पर्यावरण परिवर्तन के प्रभावों और परिणामों के ऊपर सभी राजनैतिक दलों, पर्यावरण – जलवायु विशेषज्ञों और विद्वान वैज्ञानिकों की राय लेनी चाहिये।

उपर्युक्त बताये गये तथ्यों के प्रकाश में कोपहेगन सम्मेलन की विफलता को शेक्सपीयर के शब्दों के अनुसार "शोरगुल एक छलावा और कुछ नहीं" (मच एडो अबाउट नथिंग) ही कहा जा सकता है।

सुभाष चन्द्र बोस और आज का युवा

चन्द्र कुमार बोस

मैं अपनी बातों का आरम्भ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के उन शब्दों से करूंगा जो उन्होंने "युवाओं के सपनें" के संदर्भ में 1923 में कहा था:

"...... हमारा जन्म इस विश्व में एक उद्देश्य की पूर्ति के लिये हुआ है ... एक संदेश देने के लिये। जैसा कि सूर्य का उदय विश्व को प्रकाश देने के लिये होता है, जंगल में फूल सुगंध बिखरने के लिये खिलते हैं, नदियाँ समुद्र की ओर अपने जल का उपहार लेकर चलती हैं। उसी प्रकार हम भी इस पृथ्वी पर अपनी युवा शक्ति और आनंद के साथ एक सच की स्थापना के लिये आए हैं। इस अनजान और रहस्यात्मक उद्देश्य की, जिससे हमारा यह निरुद्देश्यपूर्ण जीवन सार्थक हो जाता है, हमें खोज करनी चाहिए और इसकी खोज अपने जीवन में किए गए कार्यों से, अुभवों और चिंतन के माध्यम से होनी चाहिए।"

बोस जी का विश्वास था कि युवा एक सुन्दर विश्व का निर्माण कर सकते है। वे मानते थे कि आशा, उत्साह, साहस और बलिदान – युवाओं के विशेष गुण है। उनके छात्र जीवन के समय कलकत्ता में, उन्होंने स्पष्ट रूप से नेतृत्व, करिश्मे और साहस का जन्मजात गुण का प्रदर्शन दिखाया, और समाज की अच्छाई के लिये उन्होंने स्वयं ही त्याग का शानदार उदाहरण दिया। वे बहुत ही जल्दी समाज सेवा के कार्य में संलग्न हो गये एवं गरीबों और बिमारों की सेवा में लग गये। वे भारतीय नवचेतन के बालक बच्चे थे, जिन्हें रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद जैसे नवचेतनों के शिक्षाओं से प्रेरणा ली, जिसे उन्होंने अपने जीवन उसी अभ्यास में लगा दिया। उनका आजादी का विचार और सामाजिक न्याय पश्चिम से नहीं आया था, बल्कि इसे उन्होंने भारत की समृद्ध परंपराओं और संस्कृति से प्राप्त किया।

यह शायद ही वृहद रूप से कोई जानता हो कि उन्होंने भारतीय नागरिक सेवा (इण्डियन सिविल सर्विस) से इस्तिफा देने के बाद जब 1921 में इंग्लैण्ड से भारत वापस आये तो ब्रिटिश राज से भारत की आजादी के लिये संघर्ष में युवाओं को प्रेरित करने में संलग्न हो गये, और युवाओं को प्रेरित करने व उनके उत्साह को बढ़ाने के लिये वे स्वयं भी सक्रिय रूप से संघर्ष करने लगे और न्यायशील एवं समता समाज का एक नये भारत निर्माण की प्रक्रिया में लग गये। लगातार गिरफ्तारियों और नजरबंदि के बावजूद, बोस ने देश का दौरा किया और असंख्य छात्रों, युवाओं और श्रमिकों के सम्मेलनों को संबोधित किया। जो कुछ भी उन्होंने कहा वह आज भी प्रासंगिक है।

नागपुर में प्रथम युवा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये बोस ने कहा, "प्रत्येक मानव – औरत या पुरुष – का जन्म एक समान होता है, और औरत या पुरुष के पास विकास एक समान अवसर होते हैं" – ऐसा हमारी सोच होनी चाहिये। उन्होंने आगे कहा कि "शिक्षा और विकास में एक समान अवसर मिलना चाहिये"।

बोस जी का दृढ विश्वास था कि समाज में मौलिक परिवर्तन के कार्य में, युवाओं महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिये। लेकिन इस कार्य के लिये युवाओं में, चरित्र, आदर्श और उत्साह की आवश्यकता है। उन्होंने कहा था "कार्यवाही के बिना सोच चरित्र का निर्माण नहीं कर सकता, और इन सबके लिये राजनीति, सामाजि और कलात्मक कार्यों में पूर्ण रूप से भाग लेना होगा। (19 अक्तूबर 1929 में पंजाब के लाहौर में आयोजित छात्र सम्मेलन, में दिया गया भाषण)।

अत: इस प्रकार हम कह सकते है कि यूवाओं को अपने दो मजबूत स्तंभ बनाने होंगे – एक सुनहरे विश्व की स्थापना और चरित्र निर्माण। इस सोच और चरित्र के बिना, जीवन भोग भौतिकवाद में निहित हो जायेगा और आजादी का कोई अर्थ नहीं रह जायेगा। उसी मौके पर बोस जी ने कहा था

की बिना आजादी, व्यक्ति या देश सम्मान के साथ नहीं जी सकता है। और इसलिये वे चाहते थे कि यूवा सैनिक अपने विचारों का विकास करें, और चरित्र का निर्माण करे तथा बेहतरीन राष्ट्र निर्माण हेतु त्याग के लिये तत्पर रहना चाहिये।

हमारे देश की आजादी के लगभग 60 वर्ष पार कर चुके है। लेकिन बड़े दु:खी मन से कहना पड़ रहा है कि हम अभी तक सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था और सच्चे लोकतंत्र की स्थापना में भी सफल नहीं हो सके। हम अभी भी गरीबी, बिमारी और निरक्षरता में फँसे हुये है। हमारे कुछ यवाओं ने प्रोद्योगिकी और विज्ञान के क्षेत्र में काफी प्रगति की है। लेकिन बहुत बड़ी संख्या में हमारे युवाओं के पास शिक्षा और जीवन गुजारे के बहुत ही कम अवसर है। भारत सरकार की आंकड़ों के अनुसार, भारत की जनसंख्या का एक चौथाई भाग गरीबी रेखा से नीचे जीवन गुजर-बसर करने के लिये मजबूर है। 29.6 करोड़ लोग निरक्षर है। परिस्थिति यह है कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के सपनों का भारत अभी बहुत दूर है। (कुल जनसंख्या 1.2 अरब)

विश्व के दूसरे युवा शक्ति की तरह भारत की युवा शक्ति न्याय और समाजिक समानता पर आधारित राष्ट्र निर्माण में अपना सहयोग दे सकते हैं। हमसभी भारत में बदलाव के लिये कार्य और विकास में लगे हुये है, जिसे हम आपके साथ बांटना चाहते हैं। हमारी नीति और उद्देश्य और कार्यक्रम बोस जी आदर्शो पर आधारित है, जिसकी आज के संदर्भ में बहुत आवश्यकता है। इस बदलाव के लिये मुख्य रूप से तीन घटकों की आवश्यकता है, जिसमें युवाओं को महत्वूपर्ण भूमिका अदा करनी होगी।

1. सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी का संवर्धन :

हमलोग आज राजनीति, सरकार और व्यापार में भ्रष्टाचार से ग्रस्त है। लालच और गैर जिम्मेदाराना व्यवहार से विश्व में आर्थिक समस्या उत्पन्न हो गयी है। युवा इसमें निम्न प्रकार से महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है:

(क) अपना स्वयं का उदाहरण देते हुये, वित्तीय क्षेत्र और समाज में विस्तृत रूप से फैले वर्तमान संकटों वालों कारकों में शामिल न हो।

(ख) जो गलत कार्यों में लगे हुये है उनका पर्दाफाश करें। इसके लिये वे इंटरनेट सुविधा का इस्तेमाल करें, या सूचना के अधिकार का इस्तेमाल करें।

2. पर्यावरण संरक्षण:

इस क्षेत्र में युवा वास्तव में एक बहुत बड़ा हिस्सेदार है। युवाओं को पौधों की रक्षा करनी चाहिये एवं स्वच्छ हवा और पानी के लिये प्रयास करें, ताकि वे अपना भविष्य और आने वाली पीढ़ियों को लाभ पहुँचा सके। इसके लिये हम महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।

(क) यूवा स्वयं को भारत के शहरों में प्रदूषण होने वाले खतरों और दूनिया में सीमित संसाधानों के प्रति जागरूकता अभियान चला सकते हैं। हम इस कार्य के लिये और इस आन्दोलन की मजबूती के लिये कालेजों और स्कूलों आगे आना चाहिये।

(ख) इसके अलावा हम पेड़ लगाने की सरल प्रक्रिया को भी अपना सकते हैं।

3. उपयोग के लिये शिक्षा:

आज भारत में सैकड़ों स्नातक और हजारों स्कूली छात्र है जो अपने ज्ञान को उन लोगों के साथ बांटना चाहते हैं जो शिक्षा के उपयोगिता से वंचित है। हम रास्तों की तलाश कर रहे हैं जिनसे शिक्षित युवा छात्र भाषा और गणित जैसे विषयों की बुनियादी कौशल प्रदान कर सके ताकि कोई भी युवा या व्यक्ति भारत में शिक्षा के अधिकार से वंचित न रह सके।

(नेताजी सुभाष फाउण्डेशन, यू.के. द्वारा 30 जुलाई 2009 को लंदन में आयोजित समारोह में दिया गया भाषण)

बीटी बैंगन के खिलाफ जन विरोध

केन्द्रीय सरकार की व्यवसायिक उद्देश्य से आनुवांशिक फसल जैसे बी.टी. बैंगन का प्रस्तावित कदम का देशभर में अलग-अलग भागों से जनता इसका विरोध कर रही हैं। 13 जनवरी 2010 कोलकात के बोस संस्थान में आयोजित सभा का बहुत विरोध किया गया। केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश द्वारा घोषित अलग-अलग शहरों में 7 सभाओं के तहत यह पहली सभा थी, इसके अलावा अन्य सभाओं का आयोजन बैंगलोर, हैदराबाद, भुवनेश्वर, नागपुर, अहमदाबाद और चंडीगढ़ में फरवरी 2010 के मध्य तक होगा।

तूफानी कोलकाता सभा में इस प्रकार के जहरीले जैव विविधता वाली सब्जियों के प्रस्ताव के बढ़ते कदम का घोर विरोध किया गया क्योंकि यह हमारी प्रणालियों और किसानों को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों पर निर्भर सकता है। प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक प्रो. आर.एन. बोस ने बताया कि यदि बी.टी. बैंगन का उत्पादन एक बार भी हुआ तो देश की बीज सुरक्षा और कृषि संप्रभुता दांव पर लग जायेगी। उन्होंने जोर देकर कहा कि कृषि इस प्रकार से दुनिया की बड़ी कंपनियों में की कठपुतलि बन जायेगी। अन्य विशेषज्ञों ने कहा कि, गरीबों को इसका कोई फायदा नहीं मिलेगा। इस अनुवांशिक जैविक फसल के कीड़े से कोई नुकसान नहीं होगा, इसका खण्डन किया और कहा कि इसके प्रचार के संबंध में बहुत ही सावधान है क्योंकि यह खाद्य फसल है।

सभा में 400 लोगों ने भागीदारी की, जिसमें ज्यादातर वैज्ञानिक, कृषि विशेषज्ञ, किसान, उपभोक्ता और गैर सरकारी संस्थानों (एनजीओ) के सदस्यों

ने भाग लिया। अखिल हिन्द अग्रगामी किसान सभा की ओर से पश्चिम बंगाल राज्य कमिटी सचिव हरिपद बिश्वास ने इस सभा में भाग लिया और सभा में वक्तव्य दिया और एक ज्ञापन सौंपते हुये कहा कि इस तरह के व्यवसायिक उत्पादन एवं किसान विरोधी आनुवांशिक जैविक पौधों, जो कि सिर्फ साम्राज्यवादी एजेंटो और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लाभ के लिये प्रस्तुत किया जा रहा है, इसका हम जन विरोध करेंगे।

ग्रीन सक्रिय भागीदारों ने इस अपवाद पर कहा कि यह जेनेटिक इंजिनियरिंग अप्रुवल कमिटी, जो पर्यावरण मंत्रालय का एक अंग है, ने अधिकांश जनता के विचारों के अनुसर बी.टी. बैंगन की खेती को व्यवसायिक खेती में का दर्जा दे दिया। उन्होंने केन्द्र सरकार पर आरोप लगाया कि सरकार इस योजना के साथ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हाथों की कठपुतली की तरह खेल रही है और इस प्रस्तावित योजना को तुरन्त ही वापस ले लिया जाये।

अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक के 16वें राष्ट्रीय सम्मेलन से एक सुनहरा ऐतिहासिक अध्याय जुड़ा

25 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद कोलकाता में संपन्न हुई अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक के 16वें राष्ट्रीय सम्मेलन से एक सुनहरा ऐतिहासिक अध्याय जुड़ा। यह पाँच दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन 17 से 21 दिसम्बर 2009 को संपन्न हुआ, जो अपने आप में ऐतिहासिक महत्व का साबित हुआ। इसमें 22 राज्यों से 103 पर्यवेक्षकों सहित 1074 प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा 18 देशों के साथि विदेशी प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

इस ऐतिहासिक अवसर पर पूरा कोलकाता शहर को हजारों रंगीन बैनरों, होर्डिंग, झण्डों, दिवार लेखन (वॉल राईटिंग) और बड़े आकार के नेताजी सुभाष चन्द्र बोस तथा पार्टी के पूर्व नेताओं के चित्रों से बहुत ही सुन्दर तरीके से सजाया गया था, जिसके साथ-साथ केन्द्रीय कमिटी की सभाओं के भी चित्रों की प्रदर्शनी दर्शायी गयी थी। इन पाँच दिनों के दौरान हवाई अड्डे से रेलवे स्टेशन तक, दक्षिण से उत्तर तक, पूर्व से पश्चिम तक पूरे शहर को इस तरह से सजाया गया था मानो जैसे वह नेताजी शहर हो।

17 दिसम्बर 2009 को प्रातः कालीन सत्र 10 बजे महाजाति सदन (कमल गुहा नगर, शंकर दत्त मंच) में पार्टी अध्यक्ष साथी वेलप्पन नायर के पार्टी झण्डा रोहण के साथ सम्मेलन की शुरूआत हुयी तथा इनके साथ-साथ पार्टी के अन्य मुख्य नेताओं ने नेताजी के प्रतिमा और शहीदों की वेदी पर फूल चढ़ाकर श्रद्धांजलि अर्पित की गयीं। आजाद हिन्द वाहिनी और झांसी रानी वाहीनी ने सलामी दी।

17 दिसम्बर 2009 को अपराह्न 2 बजे सम्मेलन का खुला अधिवेशन का आयोजन कोलकाता के शहीद मिनार मैदान में किया गया। उक्त सम्मेलन में रिकार्ड एक लाख लोगों ने भाग लिया, जिनमें मुख्य रूप से आदिवासी, अल्पसंख्यक और ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं ने भाग लिया। इससे पश्चिम बंगाल में अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक की ताकत का एहसास किया गया साथ ही वाम आन्दोलन के लिये एक मजबूत संदेश भी मिला कि प्रतिक्रियावादी दक्षिण पंथि शक्तियों के विकल्प के रूप में वाम शक्ति एकमात्र विकल्प है। पार्टी अध्यक्ष साथी एन. वेलप्पन नायर ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। अपने स्वागत भाषण में पूरे देश में राष्ट्र व्यापि वाम एकता की उन्होंने अपिल की और पार्टी कार्यकर्ताओं से साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष का आह्वान किया। अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक के महासचिव साथी देवब्रत बिश्वास ने अपने एक घंटे से अधिक समय के लंबे भाषण में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर विचार व्यक्त किया और अमेरिका साम्राज्यवादी शक्तियों के आक्रमण से भारत सहित विश्व में उत्पन्न खतरनाक परिस्थितियों का उल्लेख किया। इस आक्रामक साम्राज्यवादी शक्ति के विरुद्ध संघर्ष करने के लिये उन्होंने लोगों को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के दिखाये रास्ते पर चलने का आग्रह किया। देश में जन विकल्प को स्थापित करने के लिये राष्ट्र व्यापि वाम एकता ही एकमात्र उपाय है।

पार्टी के वरिष्ठतम नेता साथी अशोक घोष ने सम्मेलन में अपना भाषण करते हुये कहा कि वास्तविक वाम एकता की देश ही जरूरत है, न की छद्म वाम एकता की जो आज के दौर में पूरे देश में फैली हुयी है। वे लोग जो यह कहते है कि धन का रंग नहीं होता और पूँजीवाद को बल प्रदान कर विकास का यही एकमात्र रास्ता बतलाते है निश्चित रूप से वे लोग जनता को गुमराह करते हैं। ऐसी परिस्थिति में उन्होंने कहा कि इस छद्म वामपंथियों से हमें चौकन्ना रहना चाहिये और एक वास्तविक वाम एकता को विकसित करना चाहिये जिससे हम साम्राज्यवादी और पूँजीवादि शक्तियों के विरुद्ध जंग छेड़ सके। पार्टी सम्मेलन के खुले अधिवेशन में मंच पर विदेशी प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। एक अन्य मंच, लक्ष्मीनारायण चक्रवर्ती मंच, बगल में तैयार किया गया, जिस पर पार्टी के निमंत्रण पर 80 स्वतंत्रता सेनानि उपस्थित थे। मंच पर उन्हें पार्टी नेताओं ने सम्मानित किया। जनसभा के पश्चात् प्रतिनिधि मंडल का प्रथम सत्र सायंकाल 17 दिसम्बर 2009 को महाजाति सदन में आयोजित हुआ। पार्टी महासचिव साथी देवब्रत बिश्वास ने राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, सांगठनिक रिर्पोटों के साथ-साथ महासचिव की रिपोर्ट का दस्तावेज भी प्रस्तुत किया।

पार्टी सम्मेलन का अंतर्राष्ट्रीय सत्र 18 दिसम्बर 2009 को महाजाति सदन में प्रातः 10 बजे विशिष्ट विदेशी प्रतिनिधियों के आगमन के साथ, मधुर गीतों और हृदयात्मक तालियों की गड़गड़ाहट के साथ प्रारम्भ हुआ। पार्टी सचिव एवं अंतर्राष्ट्रीय मामलों के प्रभारी साथी जी. देवराजन ने सत्र का संचालन किया। राष्ट्रीय सम्मेलन की स्वागत समिति ने विदेशी मेहमानों को उपहार भेंट किया। साथी विदेशी मेहमानों ने सम्मेलन को अपनी शुभकामनायें दी। पूरा कार्यक्रम बहुत ही मनोहर एवं शानदार था जिसने सम्मेलन के आरम्भिक क्षणों को गौरव से भर दिया। दोपहर में, वामदल नेताओं साथी प्रकाश करात (महासचिव सीपीएम), साथी ए.बी. बर्धन (महासचिव सीपीआई) और साथी देबब्रत बंदापाध्याय (सचिव आरएसपी) ने संबोधित किया। साथी (डॉ) बरूण मुखर्जी सभी नेताओं का स्वागत किया और साथी देवब्रत बिश्वास ने दिया। वाम नेताओं ने वाम एकता को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर

दिया और संयुक्त रूप से एकत्रित होकर साम्राज्यवादी ताकतों से संघर्ष करने का आह्वान किया।

निम्नलिखित विदेशी प्रतिनिधियों ने पार्टी सम्मेलन में भाग लिया:

रिम हो सांग (वर्कर पार्टी ऑफ कोरिया), किम ह्योन द्वितीय (वर्कर पार्टी ऑफ कोरिया), जी पिंग (कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाईना), लि योंग पेंग (कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाईना), एप्रो सेम डाबा (कोरिया), होंग थांग (वियतनाम), साहा (नेपाल), उदय राज पाण्डेय (नेपाल), सैय्यद जाफर सज्जाद (बांग्लादेश), बिमल रत्यानके (श्रीलंका), खालिद हैदवी (फिलिस्तिन), हसन बाबर (पाकिस्तान), महेरा आलम (पाकिस्तान), हुसैन राशिद (माद्विव), आसिम मोहम्मद (मालद्विव जम्हूरी पार्टी), मुसान बातु (मालद्विव), लक्ष्मी चक्रवर्ती (बांग्लादेश), रथिर चक्रवर्ती (बांग्लादेश), मोहम्मद हुसैन (बांग्लादेश), अलि अहमद (बांग्लादेश), टिंग माथ (बर्मा), कींग लो (म्यांमार), लताना थावो सोक (लाओस), उमर तुरून (वेनेजुएला), निरमला सुकिथ (श्रीलंका), एडवार्डो इग्लेशियन क्विंटाना (कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ क्यूबा)।

सभी दस्तावेजों पर चर्चा के लिये विभिन्न राज्यों से प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। साथी जी. देवराजन ने अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों के प्रस्तावों पर और साथी डा. बरूण मुखर्जी ने राष्ट्रीय प्रस्तावों पर जवाब दिया। यह चर्चा लगातार 19 और 20 दिसम्बर 2009 तक चली। 21 दिसम्बर 2009 को, साथी देवब्रत बिश्वास ने बहस के दौरान सभी का जवाब देते हुये नये केन्द्रीय कमिटी की घोषणा की। पूरे प्रतिनिधि सत्र को चार सभापतियों द्वारा आयोजित किया गया, जिसमें साथी एन. वेलप्पन नायर, साथी (प्रो.) अमर सिंह कुशवाहा, साथी सुब्रत बोस और साथी नरेन दे थे।

तीन दिनों तक चलने वाले प्रतिनिधि सत्र में 100 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मौजूदा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दस्तावेजों पर लम्बी चर्चा के बाद, मुख्य रूप से इन दस्तावेजों को कुछ सुधारों और सुझावों के बाद स्वीकृत कर लिया गया।

प्रतिनिधि मण्डल में राज्यवार प्रतिनिधियों की संख्या निम्नलिखित थी–

पश्चिम बंगाल – 538, आन्ध्र प्रदेश – 11, मध्य प्रदेश – 31, केरल – 26, उत्तराखण्ड – 10, बिहार –51, त्रिपुरा – 31, मणिपुर – 2, हरियाणा – 4, जम्मु और कश्मीर – 19, पुदुचैरी – 19, नागालैण्ड – 3, तमिलनाडु – 79, अण्डमान एवं निकोबार – 3, पंजाब – 5, दिल्ली – 25, आसाम – 43, उड़ीसा – 21, झारखण्ड – 46, उत्तर प्रदेश – 54, महाराष्ट्र – 22, कर्नाटक – 31।

अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक महासचिव ने समापन भाषण में कहा कि साम्राज्यवादी और पूँजीवादी शक्तियों के बदलते हुये नये तकनीकी आक्रमणों से एक नया राजनैतिक संकट बन गया है। देश का बुर्जुआ वर्ग भी जनता के शोषण के नये रास्ते तलाश रहा है। इन दोनों की वैश्विक साम्राज्यवाद के साथ मिलीभगत है। परन्तु दुर्भाग्य के साथ कहना पड़ता है कि वामशक्तियाँ इनको मुँहतोड़ जवाब देने के लिये नये तरीके ढूँढ पाने में असफल रही है। इस तरह वामपंथ दुविधा के दौर से गुजर रहा है। वामपंथ के लिये यह यक्ष प्रश्न बन चुका है कि इनके साथ किस नये तरीके से निपटा जाये। हमें ऐसे तरीकों की तलाश व्यक्तिग और सामूहिक स्तर पर करनी पड़ेगी। हमें नये रास्तों की तलाश लगातार संघर्षों को जारी रखते हुये तलाशना होगा। यह संघर्ष आदर्श के स्तर पर, संस्कृति के स्तर पर और साथ ही साथ सामाजिक – राजनैतिक क्षेत्रों के स्तर पर जारी रहेगा। 16वां राष्ट्रीय सम्मेलन में उन्होंने इस नये संघर्ष को बहुआयामी बनाने का आह्वान किया।

21 दिसम्बर 2009 को प्रतिनिधि सत्र के समापन भाषण ने साथी अशोक घोष ने हाल के संपन्न हुये लोकसभा और पश्चिम बंगाल और केरल के चुनावों में मिली जनता की अस्वीकृति को स्वीकार करते हुये कहा कि वामदलों ने चुनाव में बुरा प्रदर्शन किया। तृणमुल कांग्रेस के रूप में एक नई प्रतिक्रियावादी ताकत का उभार हुआ है। मैं ऐसा सोचता हूँ कि इसके पीछे एक अंतर्राष्ट्रीय शक्ति कार्य कर रही है। इसी उद्देश्य से हमलोगों ने पार्टी का सम्मेलन विशेष रूप से कोलकाता में आयोजित किया। 22 राज्यों से आये प्रतिनिधि मंडलों के बड़े भागीदारी के ऐसे आयोजन को शायद देखा हो। मुझे याद है कि ऐसा ही विशाल पार्टी सम्मेलन 1947 में बिहार के आरा में हुआ था, जिसमें 2000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था और खुले अधिवेशन में 4 लाख लोग एकत्रित हुये थे। अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक आज भी नेताजी के सपनों को पूरा करने के लिये संघर्ष कर रही है, परन्तु हमलोग इसे महज शब्दों से हासिल नहीं कर सकते। बल्कि हमें एक क्रांतिकारी सेना, एक क्रान्तिकारी पार्टी, की जरूरत है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद समाप्त हो चुका है, और इसके स्थान पर अमेरिकी साम्राज्यवाद स्थापित हो चुका है और अपने पाँव फैला रहा है। हमें इसके विरुद्ध संघर्ष के लिये राष्ट्र व्यापि स्तर पर मजबूत वाम एकता को विकसित करना होगा।

16वें पार्टी सम्मेलन में कुछ उल्लेखनीय तथ्य भी सामने आये जैसे – विभिन्न समकालीन विषयों पर सेमिनारों का आयोजन हुआ, अनेक सांस्कृति कार्यक्रम हुये, और दो महत्वपूर्ण प्रदर्शनियों के साथ नेताजी पर उल्लेखित लाईट एण्ड साउण्ड कार्यक्रम सम्मेलन स्थल महाजाति सदन से बाहर शहर के विभिन्न केन्द्रों पर आयोजित किया गया। तीन सेमिनारों का आयोजन हुआ:

(1) 15 दिसम्बर 2009 को सुबोध मलिक चौक, कोलकाता – विषय 'नेशनल गवर्नमेंट इन इक्जाइल : रोल एण्ड इम्पोर्टेंस ऑफ आजाद हिन्द सरकार इन इण्डियाज फ्रीडम मूवमेंट', वक्ता – प्रो.: प्रणब कुमार चट्टोपाध्याय, दूसरा विषय था – आई.एन.ए. : इट्स ओरिजिन एण्ड ग्रोथ एण्ड इट्स हिरोइक स्ट्रगल फॉर फ्रीडम ऑफ इण्डिया – वक्ता – डॉ. सुभाष चन्द्र चटर्जी

(2) 19 दिसम्बर 2009 – दरभंगा हॉल, कोलकाता विश्व विद्यालय – विषय – 'पार्टीशन ऑफ इण्डिया' : कोजेज एण्ड कोनसिक्वेंसेज : वक्ता डॉ. अमलेन्दु दे और श्री मिहीर गांगुली।

(3) 20 दिसम्बर 2009 – महाजाति सदन (उपभवन) : विषय – 'लेफ्टिज्म : प्रजेन्ट फेज एण्ड फ्युचर प्रोस्पेक्ट्स – वक्ता – प्रो. प्रभात पटनायक।

दो विशिष्ट प्रदर्शनियाँ आयोजित हुई : (1) सुभाष मलिक चौक : नेताजी का जीवन और संघर्ष; (2) मेट्रो चैनल (धर्मतला) : विश्वव्यापि साम्राज्यवादी संघर्ष।

कोलकाता के सुबोध मलिक चौक और रविन्द्र कानून पर अलग-अलग आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

16वें पार्टी सम्मेलन की पूर्व संध्या पर अनेक आकर्षक प्रकाशन जिनमें नेताजी के अनेक लेखों और अन्य तत्कालीन विषयों पर आधारित एक स्मारिका प्रकाशित की गयी साथ ही अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक के पार्टी सम्मेलनों का ऐतिहासिक चित्रों का अद्वितीय एलबम भी प्रकाशित किया गया।

महान वामपंथी नेता को सलाम : ज्योति बसु का निधन

सबसे लम्बी अवधि तक मुख्यमंत्री पद पर आसिन, एक सच्चे राष्ट्रीय स्तर के नेता ज्योति बसु का निधन 96 वर्ष की आयु में 17 जनवरी 2010 को हो गया। वे स्वयं में एक आचार्य, एक दन्तकथा, एक संस्थान थे। वे जीवन में लम्बे समय तक संघर्ष से जुड़े रहते हुये उन्होंने एक गौरवशाली इतिहास रच दिया। हम उन्हें अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

ज्योति बसु सरकार या पार्टी में शीर्ष पर रहे। लेकिन समाज के किसी भी वर्ग के लोगों के साथ उनकी प्रतिक्रिया सदैव साधारण होती थी। व्यक्ति चाहे कितने भी बड़े पद, समाज के नीचले स्तर, दलगत या विपक्ष का हो, वे सभी के की सहायता स्वतंत्र रूप से करते थे। जिस कारण उनके प्रति सभी में श्रद्धा थी।

उन्होंने अपने संसदीय जीवन को कामगार संगठन के प्रतिनिधित्व से आरंभ किया। उनके लम्बे संसदीय जीवन में हमेशा ही श्रमिक वर्ग और दलितों के लिये संघर्ष करते रहे। वे सच्चे अर्थों में वामपंथी थे, और उन्होंने कभी भी वामपंथ के परंपरागत मार्ग को नहीं छोड़ा। उन्होंने वामपंथी को व्यवहारिक रूप से लागू किया। उन्होंने वामपंथी मोर्चा स्थापित करने और वामपंथी सरकार देने में एक अनोखी सफलता हासिल की। वामएकता उनके दिल की गहराईयों में था।

उनके विशाल व्यक्तित्व, समस्याओं के जल्द निवारण और संकट में तुरन्तु और उचित निर्णय लेने की क्षमता के कारण वे काफी अनूठे और मजबूत प्रखर नेता थे। पश्चिम बंगाल में ज्योति बसु ने सरकार में वाम नेताओं की एक टीम बनाई, जो इस देश के लिये ही नहीं अपितु पूरे विश्व के आदर्श स्थापित किया और जनता को अपनी सेवायें एक लम्बे 33 वर्षों तक देते रहे। जून 1977 में पहली बार मुख्यमंत्री बनकर सत्ता प्राप्त करने के बाद, ज्योति बसु ने एक ऐतिहासिक घोषणा किया की वामपंथी सरकार प्रशासनिक कार्य राईटर्स भवन से ही नहीं करेगी, बल्कि इसका काम राज्य गाँवों, शहरों से होतु हुये हर कोने में जनता तक पहुँचेगा। फैक्टरियों में कार्यरत जनता या किसान सरकार जनता के साथ और जनता के लिये सरकार चलायेंगे। उनके भावनाओं की आवश्यकता हमलोगों को भी है। हमलोग जो कुछ भी प्रशासनिक तौर, पार्टी में या व्यक्तिगत स्तर से कार्य करते हैं व जनता के साथ मिलकर और जनहित में करना चाहिये। उनके लिये यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

किसानी घोषणा पत्र

डॉ. ब्रह्मदेव शर्मा

हमारे देश में दस-पन्द्रह फीसदी 'राज' के वारिस सुविधाभोगी 'वर्ग' ने सभी संसाधनों और पूरी व्यवस्था पर कब कर लिया है। उसने अपने को 'असली भारत' भी घोषित कर दिया है। इस वर्ग ने आम लोगों के हाथ में भी तसल्ली के लिये कुछ खिलौने ने पकड़ा कर या आगे के लिये उनको कुछ लोभ दिखा कर बुनियादी ताथ्य पर उपनिवेशवादी विकास को असली विकास जताकर देश के साथ सबसे बड़ा धोखा किया है। उसी धोखे की टट्टी की आड़ में और राज की व्यवस्था के सहारे आम लोगों को हर तरह की हकदारी से बेदखल कर आंतरिक उपनिवेश जैसी व्यवस्था कायम करने में वह मशगूल है। यही नहीं एक ओर वह पूरे देश पर उस जकड़ को आरैर भी मजबूत और स्थाई बनाने के चक्कर में है। दूसरी ओर जागतिक स्तर पर उपनिवेशवादी, भोगवादी व्यवस्था में वह किसी भी हैसियत से शामिल होने के लिये आतुर है। इसी जुगाड़ में वह आज जगतीकरण और खुले बाजार अथवा उदारीकरण के बहाने नवउपनिवेशवादी पूँजीवादी व्यवस्था का दलाल बन गया है। उसने देश की आजादी और अस्मिता तक दाँव पर लगा दी है। इसी के चलते हमारा देश आज विघटन के कगार पर पहुँच गया है। समाज टूट रहा है। आम आदमी, खासतौर पर गाँव और गरीब, के खिलाफ अन्याय और उनके शोषण की कोई सीमा नहीं है। एक ओर बच्चे भूख से तड़प रहे हैं, दूसरी ओर निर्लज्ज अय्याशी का आलम है। गाँव तबाह हो रहे हैं, शहर फल फूल रहे हैं। तबाही से त्रस्त गाँव के किसान मजदूर, दस्तकार ही नगरों और महानगरों की गंदी बस्तियों और सड़क की पटरियों पर खुले आसमान के नीचे नरक की जिन्दगी बसर करने के लिये मजबूर हैं। बहरहाल, देश दो देशों में बँट गया है - शहरी-संगठन (वारिस) तथा गाँव और गरीब अथवा ग्रामीण असंगठित (बेदखल)।

इस नये संदर्भ में उत्तम खेती अब निकृष्ट हो गई है। अपने हाथों से खेती करने वाला किसान मिट रहा है। खेती घाटे का सौदा कर दी गई है। इंसानी संवेदना और इंसानी रिश्तों की धनी हमारी जीवन शैली, हमारी अनमोल विरासत, सभ्यता और संस्कृति का विलोप हमारे सामने है। उसकी जगह बाजार हावी होता जा रहा है। इस बाजार में हर चीज बिकाऊ है - धरती, इंसान, इंसानी रिश्ते और अस्मत भी। सभी का एक पैमाना है - रुपया। इस तरह सब कुद

छिन जाने के बाद स्वाभिमानी किसान–मजदूर की औकात उस मीना बाजार में एक 'मूल्यहीन वस्तु' के सिवाय कुछ हो ही नहीं सकती। उन्हीं मूल्यहीनों का ढेर लगा कर अब उन पर 'खारिजी' की पर्ची लगाई जा रही है।

यह सब आजादी के पचास साल के भीतर ही हो गया है। और वह भी उस आजादी के बाद, जिसके लिए देश के किसान–मजदूर लगातार संघर्ष और विद्रोह तक करते रहे थे। आखिर में उन्हीं को साथ लेकर उन्हीं के ही वेष में उस सुलगते विद्रोह की अगुवाई गाँधी जी ने की थी। एक सपना देखा था 'हमारे गाँव में हमारा राज होगा' एक अहद किया था 'देश में न गरीबी रहेगी और न अमीरी'। आपसी मेलजोल और भाईचारे के आलम में नई जिन्दगी की शुरूआत होगी जिसमें धर्म, जाति, भाषा, लिंग, क्षेत्र इत्यादि के कारण किसी तरह का भेदभाव नहीं होगा। इन मूल्यों को संविधान में संजोया गया। उसका पालन करने की अनगिनत शपथें लीं गईं। परन्तु आज देखते क्या हैं – चले थे पूरूब, की ओर पहुँच गये ठीक उसके उल्टे पश्चिम में .....। आज संविधान बरकरार है, उसकी शपथें भी ली जा रही हैं। परन्तु वह मूल चेतना तथाकथित विकास की होड़ और हड़बड़ी में कहीं खो गई।

सच तो यह है कि हमारे सत्ता के वारिस गिरोह ने आजादी के तुरंत बाद से ही दुरंगी चाल चली थी। उसने विरासत के रूप में मिली अपनी 'राजसी' हैसियत – को हाथ से जाने नहीं दिया। आम आदमी, खास तौर से गाँव तक आजादी पहुँची ही नहीं है। संसाधनों पर 'राज राज्य' का कब्जा बना रहा। विकास के नाम पर गाँव और गरीब की लूट गहराती गई। गाँव और शहर के बीच की दूरी ड्योढे (1947) से बढ़कर दस गुणी (1991) हो गई। किसानी की मेहनत का मोल 10–15 रुपये रोज और संगठित क्षेत्र में पगार – पचास, सौ दो सौ या हजार रुपये रोज .... अब तो नाम के लिए भी ऊपर कोई सीमा तक नहीं है। दूसरी ओर हकदारी के खेल में किसान और खेत मजदूर दोनों ही पिसते गए, गाँव तबाह होता गया।

इस बदहाली के खिलाफ कहीं गाँव और गरीब बगावत न कर बैठे, वोट वाले, 'एक दिन का' बादशाह कहीं नाराज होकर सिंहासन ही न उलट दे, इस डर से उसके लिये हर तरह का भ्रमजाल रचा जा रहा है। विका की मोहिनी डालकर उन्हें आपस में लड़ाया जाता रहा है। उसकी हकदारी के सवाल पर मोटा पर्दा डालकर, भीख के दो टुकड़े फेंक उसकी रही सही खुद्दारी भी खत्म की जा रही हैं जिससे वह आँख से आँख मिलाकर बात करने लायक भी न रह जाए। यही नहीं, ये मगरूर इस खुली लूट पर भी उसूलों का मुलम्मा चढ़ाकर अपने को पाक–साफ और किसान–मजदूर की बदहाली के लिये खुद उसे ही जिम्मेदार या उसकी अपनी करनी का फल जताते रहे हैं। गाँव का भोला इंसान 'कौन जाने ऐसा ही होगा?' सोचकर उस पर यकीन भी कर बैठा है।

फरेब और लाचारी के इस माहौल में इस बेईमान भद्रलोक की हिम्मत इतनी बढ़ गई है, अपनी अन्यायी स्थिति के बारे में वह इतना आश्वस्त हो पाया है कि उसने अपनी हविश पूरी करने की खातिर हमारे देश को भारी कर्जे में फँसा दिया, देश पर अपनी ही रचे संकट का नाम लेकर उसके संसाधनों की खुली लूट और मेहनतकशों के निर्मम शोषण के लिये दरवाजे खोल दिये, देश की आजादी तक को दाँव पर लगा दिया और खुद नवउपनिवेशवादी पूँजीवादी गठजोड़ का दलाल बन गया।

इस तरह मैकॉले का सपना पूरा हो गया। देशी रंग रूप मगर अँग्रेजी रूहानियत वाले इस वर्ग के लिये ये रिश्ते गुलामी नहीं, आजादी का पैगाम है, देश में नया विहान है, उषा काल का मंद समीर बह रहा है। उसकी नजर में देश और समाज पर संकट के बादल घिर जाने की बात बेतुकी है। उसके बुनयादी कारणों या दूरगामी परिणामों के प्रति किसी को चिन्ता या किसी की रूचि होने का कोई सवाल ही नहीं है। नये परिवेश में नये उसूलों के तहत हर कोई किसी भी कीमत पर अपना मतलब पूरा करने अपना घर भरने की गहमागहमी में लगा है। निजी सफलता और देश के विकास के लिये गिरे इंसानों की उसी स्वार्थी प्रवृत्ति को कुंजी बताया जा रहा है। ऐसे में निहित स्वार्थों और ठेठ असामाजिक तत्वों का बोलबाला कोई अजूबा या असाधारण बात नहीं है, वह तो नये परिवेश की सामान्य गति है।

किसी ओर से कोई आशा न रह जाने पर, राष्ट्रीय और मानव समाज पर इस गहराते संकट से चिन्तित और अद्वेलित हम देश के किसान, मजदूरों को इस गंभीर चुनौती का मुकाबला अब हमें खुद करना है। संघर्ष की कामान हमें खुद संभालनी पड़ेगी। उसका मुँहतोड़ जवाब हमें देना होगा।

संकल्प

आज यह साफ है कि आजादी के बाद से ही हम किसान–मजदूरों को भारी धोखे में रखा गया है। हम देश के इन तथाकथित भद्रलोक, खासतौर से राजनेताओं, नौकरशाहों, पूँजीपतियों, हर किस्म के बिचौलियों और मासूमियत का नकाब लगाये हर रंग के लुटेरों को सूचित कर देना चाहते हैं किसान–मजदूर की हकदारी में लगी सेंध, नई व्यवस्था से हमारी खारिज की नियति हमें मंजूर नहीं है। उसूलों के लबादे की आड़ में गाँव की खुली लूट और उसकी निलामी का आलम अब हमें बर्दाश्त नहीं। हम यह संकल्प लेते हैं कि उदारीकरण के नाम पर हम अपने देश में नवउपनिवेशवाद की काली छाया नहीं पड़ने देंगे। हमारे सामने अब सवाल सिर्फ रोटी का नहीं, प्रतिष्ठा का भी है। हमारी धरती, हमारी ईज्जत और हमारी अस्मत का कोई मोल हो नहीं सकता है। भारत गाँवों का देश है, सो गाँव उसमें पहले नम्बर पर रहेंगे। हमारे देश में किसानी उत्तम थी, एक भारी धोखे के चलते आज वह उत्तम नहीं है, लेकिन आगे वह उत्तम रहेगी। हम स्वाभिमानी किसान–मजदूर अपनी जान की बाजी लगाकर अपने स्वाभिमान की रक्षा करेंगे, हम किसानी–केन्द्रित सभ्यता और संस्कृति कायम रखेंगे।

सही हकदारी किसानी की

किसानी के साथ सबसे बड़ा धोखा और अन्याय उसकी हकदारी को लेकर होता रहा है। पहले धरती से किसान का अधिकार जाता रहा, उसकी फसल के एक हिस्से की वसूली होती रही और आखीर में अँग्रेजों ने उस पर नकदी लगान का बोझ लाद दिया। दुनिया भर में विकास और उद्योग के लिये शुरू में पूँजी गाँव और गरीब से ही तरह–तरही की वसूली करके जुटाई जाती रही है। आजादी के बाद वहीं हमारे देश में भी हुआ, मगर बड़ी चालाकी से। हमारे देश की आज की व्यवस्था में इस वसूली के लिये न किसान से फसल में हिस्सा लेने, न खेती पर लगान बढ़ाने की ओर न उस पर सीधा कर लगाने की ही जरूरत

है। उसकी बजाय धोखे का व्यापार चलाकर, बाजार और पैसे के खेल से सरकार लोगों की हकदारी को ऐसे बढ़ा घटा लेती है जिससे मनमानी वसूली हो जाये और किसान को मालूम भी न पड़े।

इस पेंच को न समझने से किसान सरकार से उलझा रहा, खाद, पानी और बिजली के दाम के झगड़े में और सरकार फैसला करती रही फसल के भाव का। किसी ने यह नहीं सोचा कि फसल के सही दाम लग भी जाये तो उस पर जो खर्च होता है उसकी भरपाई होती है। सब कुछ निकलने के बाद किसान के हाथ में तो बचती है सिर्फ उसकी मेहनत की हकदारी। मगर हकदारी के इस मुद्दे पर कहीं कोई बहस ही नहीं हुई उसका उठाकर सरकार ने हमारी मेहनत का मोल जानबूझ कर दबाये रखा। उसी कटौती से देश में पूँजी बनी जिसका उपयोग विकास और उद्योग के लिये सरकारी खर्च जता किया जाता रहा है।

इस कटौती के मामले में नामसझी के कारण ही गांव-गांव में किसान और मजदूर के बीच आज ठनी हुई है। मजदूर सोचता है कि किसान उसकी हकदारी मारे बैठा है। किसान कहता है कि खेती उसका पड़ता ही नहीं पड़ता है। आम मान्यता यह है कि जिन्सों के भाव कम हैं इसलिये खेतिहर मजदूर की मजदूरी कम है। असल बात यह है कि किसानी की मेहनत का मोल ही सरकार ने इतना दबाकर कम कर रखा है जिससे फसलों, खासतौर से अनाज के दाम कम है। हिसाब की इसी गड़बड़ी में किसान को अपनी मेहनत का मोल भी नहीं मिल पाता है, आज किसानी घाटे का सौदा बन गई हैं। ***शेष अगले अंक में........***

साभार - नीतिमार्ग

फारवर्ड ब्लॉक के 16वें पश्चिम बंगाल राज्य सम्मेललन ने वामपंथ को मजबूत करने का आह्वान किया

अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक की पश्चिम बंगाल कमिटी का 16वां राजय सम्मेलन कोलकाता के युवाभारती, क्रीड़ानगर (पंचाशहीद नगर) में कामरेड शम्भु चक्रवर्ती मंच, में 12-14 दिसम्बर 2009 को आयोजित हुआ। राज्य की तत्कालीन राजनैतिक परिस्थिति में सदस्यगणों ने राजनैतिक वार्तालाप और विचार विनमय में बहुत रूचि लिया और आने वाले दिनों में एकजुट होकर राज्य में उभरी प्रतिक्रियावादी दक्षिणपंथी और अति चरमवादी ताकतों के खिलाफ संघर्ष करने का निर्णय लिया। उक्त सम्मेलन में 19 जिलों से 549 प्रतिनिधियों ने भाग लिया और 73 प्रतिनिधियों दो दिनों तक लगातार 12 घंटे चलने वाले लंबे वार्ता में भाग लिया।

12 दिसम्बर 2009 की प्रात: साथी रोबिन सिंह, अध्यक्ष राज्य कमिटी ने पार्टी झण्डारोहण किया और साथी डॉ. बरूण मुखर्जी, उपाध्यक्ष ने नेताजी की प्रतिमा का माल्यार्पण किया। साथी अशोक घोष, महासचिव अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक पश्चिम बंगाल राज्य कमिटी, शहीदों की वेदियों पर माल्यार्पण किया और साथी देवब्रत बिश्वास अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक महासचिव, ने बंगाल के अंतिम स्वतंत्र नवाब सिराजुद्दौला, जो अंग्रेजों के साथ बहादुरी पूर्वक लड़े थे, की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। अन्य नेताओं ने भी फूल मालायें अर्पित किया।

सम्मेलन का स्थल और मंच रंगीन बैनरों और जीवंत आकार के अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक के पूर्व नेताओं के चित्रों से सुन्दरता पूर्वक सजाया गया था। इस वजह से प्रतिनिधियों और आमंत्रित समाचार पत्रों और इलैक्ट्रोनिक मीडिया के पत्रकारों आदि बहुत आकर्षित हुये।

प्रतिनिधि सत्र का उद्घाटन अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक की केन्द्रीय कमिटी के महासचिव साथी देवब्रत बिश्वास ने किया। जिन्होंने अपने भाषण में वर्तमान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों की समीक्षा की और वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति में वाम राजनीति की महत्ता और भूमिका पर प्रकाश डाला।

प्रतिनिधि सत्र में साथी डॉ. बरूण मुखर्जी ने आगामी 16वीं राष्ट्रीय सम्मेलन के राजनीतिक दस्तावेज को प्रस्तुत किया और साथी अशोक घोष ने सचिव मण्डल की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये, राज्य की राजनैतिक परिस्थितियों और संगठनात्मक गतिविधियों को पर प्रकाश डाला।

सम्मेलन में कई प्रस्तावों के बीच तीन महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत किये गये, पूर्व मिदनापुर जिले के हरिपुर में प्रस्तावित नाभिकीय उर्जा संयंत्र के संभावित दुष्प्रभावों की गंभीर समीक्षा की गयी, दूसरे, जूट मिल कर्मचारियों के हड़ताल के समर्थन में पार्टी ने अपने समर्थन की घोषणा की, और तीसरा, पश्चिम बंगाल का अन्य विभाजन के षड्यन्त्र को निष्फल करने और गोरखा जनमुक्ति मोर्चा, ग्रेटर कूचबिहार और कामतापुर के की मांग के लिये सक्रिय जन विरोधी विभाजनकारी ताकतों के तीव्र विरोध का आह्वान किया गया।

इस तीन दिवसीय सम्मेलन में 76 सदस्यीय राज्य कमिटी का चयन किया गया जिसमें साथी अशोक घोष को राज्य का महासचिव पुन: चुना गया। सम्मेलन ने साथी अशोक घोष का सचिवों के नाम की घोषणा बाद के किसी तिथि पर घोषित करने का अधिकार दिया।

सम्मेलन में 183 सदस्यीय राज्य कांउसिल और 3 सदस्यीय राज्य कन्ट्रोल कमीशन का चयन किया गया जिसमें भक्तीपद घोष (अध्यक्ष) साथी सुब्रत

बोस और साथी अरूण गांगुली (अलीपुरद्वार) है।

प्रतिनिधि सत्र की समाप्ति के बाद, साथी अशोक घोष ने जवाब देते हुये कहा कि आने वाले दिनों में फारवर्ड ब्लॉक राज्य में वाम आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा कि वे जनता की आकांक्षा के अनुरूप कार्य करें, जैसा वे सोचते है, इससे वामएकता और भी मजबूत होगी।

अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक की पश्चिम बंगाल कमिटी की सचिव मंडल का चयन:

16वें राज्य सम्मेलन के निर्णयानुसार साथी अशोक घोष, महासचिव राज्य कमिटी ने राज्य कमिटी की पहली बैठक 7 जनवरी 2010 को बुलायी जहाँ निम्नलिखित राज्य सचिव का चयन किया गया।

क्र.	**नाम**	**पद**
1.	रबिन घोष	अध्यक्ष
2.	डॉ. बरूण मुखर्जी	उपाध्यक्ष
3.	अशोक घोष	महासचिव
4.	अपराजिता गोप्पि	सचिव
5.	नरेन दे	सचिव
6.	नरेन चटर्जी	सचिव
7.	डॉ. रथिन चक्रवर्ती	
8.	निशिकांत मेहता	सचिव
9.	रेबाती चरण भट्टाचार्य	सचिव
10.	उदायन गुहा	सचिव
11.	अक्षय ठाकुर	सचिव
12.	हाफिज आलम सैरानी	सचिव

अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक पश्चिम बंगाल राज्य कमिटी ने 4 महीनों के लम्बे कार्यक्रमों की घोषणा की

अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक पश्चिम बंगाल राज्य कमिटी की नवीन चयनित सचिव मण्डल ने अपनी पहली सभा का आयोजन 13 जनवरी 2010 को किया, जहाँ 11 मांगों के समर्थन में 4 मासिक लंबे कार्य कार्यक्रम करने की घोषणा की, तथा पार्टी की सभी इकाईयों को निर्देश किया गया कि वे सभी कार्यक्रम का शुरूआत फरवरी 2010 तक कर दें।

पार्टी ने जनवरी 2010 माह को एकमत रूप से नेताजी जन्म जयन्ती के संदर्भ में कार्यक्रम आयोजित करने के लिये समर्पित किया, जिसका मुख्य उद्देश्य 23 जनवरी – नेताजी जन्म जयन्ती को 'देश प्रेम दिवस' को प्रचारित करना व सरकार से घोषणा की मांग को मजबूत करना है।

बंगाल कमिटी ने सभी जिलों के गांवों तथा शहारों के प्रत्येक बूथ से 15 अप्लीकेंट सदस्य की भर्ती 1 फरवरी से 15 मार्च तक करने का सांगठनिक निर्णय लिया। प्रत्येक नई भर्ती के साथ संबंधित सदस्यता कार्ड जारी किया जायेगा। अत:, राज्य कमिटी ने राज्य में 10 लाख अप्लीकेंट मेम्बरशीप का लक्ष्य बनाया है।

वर्ग संगठन भी इस इस भर्ती कार्यक्रम में शामिल होंगे और एक्शन प्रोग्राम, जो 16 मार्च से 31 मई 2010 तक आयोजित होंगे, के जरिये वर्ग संगठनों को भी मजबूत करेंगे। इस दौरान, फेस अनुसार प्रचार और प्रतिनियुक्ति का गठन इस प्रकार किया जायेगा:

प्रचार : फरवरी 2010 में।

पंचायत स्तरीय प्रतिनियुक्ति : मार्च से अप्रैल 2010

ब्लॉक और महकता स्तरीय प्रतिनियुक्ति: मई 2010

प्रतिनियुक्ति निम्नलिखित 11 बिन्दुओं के आधार पर दिया किया:

1. सभी वास्तविक गरीबों को बीपीएल की श्रेणी में शामिल किया जाये और 100 दिनों के रोजगार की परियोजना का काम ठीक से लागू किया जाये।
2. सार्वजनिक वितरण प्रणाली को मजबूत किया जाये और सभी आवश्यक आवश्यक वस्तुओं जैसे चावल, आटा, दाल, खाद्य तेल और चीनी गरीबों को रियायती दर पर उपलब्ध्स करायी जाये। केन्द्र सरकार इस प्रयोजन के लिये अपनी रियायत दर में वृद्धि करें।
3. जल-जंगल-जमीन का अधिकार कानून को तत्काल लागू किया जाये।
4. अल्पसंख्यकों के आरक्षण से संबंधित रंगराजन मिश्र की रिपोर्ट स्वीकार किया जाये और उसे तत्काल लागू किया जाये।
5. विशेष आर्थिक क्षेत्र रद्द कर देना चाहिये और बड़े पूँजीपतियों की कृषि और कृषि बाजार में घुसपैठ पर रोक लगाई जाये।
6. पश्चिम बंगाल में प्रशासन में अराजकता और आतंकवाद की जाँच दृढ़ता से करें।
7. दलित आदिवासियों और अनुसुचित जाति/जनजाति के विकास कार्यक्रम तत्काल लागू किये जाये।

8. बीज, उर्वरक, कीटनाशक और कृषि उपकरण किसानों को सस्ती दरों पर आपूर्ति की जाये और सभी ब्लॉकों में विपणन केन्द्र खोले जाये।
9. बेरोजगारी की समस्या का रोजगार देकर समाधान किया जाये।
10. कृषि विकास कार्यक्रमों को करते हुये, औद्योगिक विकास भी किये जाने चाहिये।
11. राज्य के सभी गांवों में इलैक्ट्रिफिकेशन का कार्य तत्काल पूरा किया जाये।

जन आन्दोलन दिनांक 12 मार्च 2010

स्थान: रामलीला मैदान, दिल्ली

मांगें :

- **ॐ बढ़ती महँगाई पर रोक लगाओ, सार्वजनिक वितरण प्रणाली को सार्वभौमिक बनाओ।**
- **ॐ सभी खाद्य वस्तुओं के वायदा कारोबार, कालाबाजारी और पर रोक लगाओ।**
- **ॐ रोजगार की सुविधा मुहैया करायी जाये और आजीविका की रक्षा की जाये।**
- **ॐ सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क में कटौती करके पेट्रोल और डीजल की कीमतें कम की जाये।**
- **ॐ राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी कानून में मेहनताना और कार्य समय सीमा बढ़ायी जाये।**
- **ॐ मंदी के नाम मजदूरों की छंटनी रोकी जाये।**
- **ॐ गरीबों की भूमि का अधिकार और विस्तार की रक्षा की जाये।**
- **ॐ व्यापक पुनर्वितरण भूमि सुधार लागू किया जाये।**
- **ॐ बंजर और बेकार जमीनों का गरीबों को दिया जाये; कार्पोरेट घरानों को इसका हस्तातंरण रोका जाये।**
- **ॐ बेघर/भूमिहीन/छोटे और सामान्य किसानों को एक नियमित समयावधि में भूमि और घर का आबंटन किया जाये।**
- **ॐ भूमि अधिग्रहण अधिनियम 1894 में संशोधन किया जाये और विस्थापन रोकने के लिये पुनर्वास विधेयक लाया जाये, तथा विस्थापितों के मुआवजें, लाभ का अंश और आजीविका की सुरक्षा सुनिश्चित की जाये।**
- **ॐ पश्चिम बंगाल के साथ एकता बनायी जाये।**
- **ॐ तृणमूल कांग्रेस - नक्सली सहयोग से पश्चिम बंगाल में हिंसात्मक गतिविधियों के खिलाफ संघर्ष किया जाये।**
- **ॐ लोकतंत्र की रक्षा करो, हिंसा का खात्मा करो।**

सीपीआई(एम), सीपीआई, फारवर्ड ब्लॉक, आरएसपी

टी.यू.सी.सी और आई.एल.ओ. का संयुक्त कार्यक्रम

कार्यक्रम -1

टीयूसीसी की ने मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र राज्य के कार्यकताओं के लिये क्षेत्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 7 और 8 जनरवरी 2010 को एन.आई.टी.टी.आर., लेक्चर हॉल, श्यामा हिल्स, भोपाल, मध्य प्रदेश में आयोजित किया। जो आई.एल.ओ. (अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ) - साउथ एशिया कार्यालय द्वारा प्रायोजित किया गया। प्रशिक्षण शिविर के विभिन्न सत्रों को डॉ. एस. यादव (संयुक्त निदेशक मध्य प्रदेश एस.ए.सी.एस.), श्रीमती पी. जोशिला (आई.एल.ओ. - साउथ एशिया), मोहम्मद अफाक (सी.बी.डब्ल्यू.ई.), श्रीमती सुनीला शर्मा (मध्य प्रदेश एस.ए.सी.एस.) एवं अन्य निपुण व्यक्तियों ने सम्बोधित किया।

साथी एस.पी. तिवारी ने सभी का स्वागत करते हुये अपने भाषण में उन क्षेत्र को जिक्र किया जहाँ प्रशिक्षण की आवश्कता है। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को कहा कि उन्हें अपने संबंधित क्षेत्र के नेता बनना, जिसके उन्हें पूर्ण रूप से गंभीर होना चाहिए एवं अनुशासन बनाये रखना चाहिये। उन्होंने तकनीकी सत्र में बहुआयामी अनौपचारिक क्षेत्र (इनफोरमल सेक्टर) में बेहतर जीवन स्तर के लिये लोगों द्वारा किये जाने वाले गतिविधियों का उल्लेख किया। मध्य प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में कामगारों को प्रतिदिन 12 घंटे से ज्यादा कार्य करते हैं तथा निर्धारित न्यूनतम पगार भी नहीं मिलती है, उनके आका उनका शोषण कर रहे हैं। महिलाओं की स्थिति बहुत ही बुरी है, उन्हें दासों की तरह काम करना पड़ता है, परिस्थितिवश या बल पूर्वक उन्हें यौन शोषण का

शिकार होना पड़ता है। इसके साथ-साथ उन्होंने यह भी बताया कि सरकारी योजनायें और सुविधायें है। लेकिन बड़े दु:ख की बात है कि यह सभी भेड़ चाल में सरकारी प्रशासन, ठेकेदारों और राजनीतिक नेताओं के नियंत्रण में है, जो गरीब निर्दोष लोगों का शोषण कर रहे हैं।

मोहम्मद अफाक (शिक्षा अधिकारी - सी.बी.डब्ल्यू.ई.) ने अपना प्रस्ताव रखा कि कार्यक्रम में भागीदार लोग दलितों और शोषितों के उत्थान के लिये अपनी बातों और कार्यों से जनता को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

श्रीमती पी. जोशिला (आई.एल.ओ.) तकनीकी सत्र के दौरान कार्यक्रम के सहभागीयों को एच.आई.वी./एड्स पीड़ित लोगों के साथ बातचीत करने तथा कलंकित और पक्षपात किया बिना उनके साथ दोस्ताना व्यवहार बनाये रखने की सलाह देते हुये इन सब का विश्लेषण एक कार्ड गेम के जरिये समझाया। उन्होंने बताया कि समाज के इस असुरक्षित वर्ग को देखभाल और उनकी समस्याओं के निवारण की आवश्यकता है, जो जानकारी और जागरूकता के अभाव के कारण इस महामारी की चपेट में आ गये है।

मध्य प्रदेश इकाई टी.यू.सी.सी. महासचिव साथी संजय यादव ने सभी भागीदारियों का सहयोग और साकारात्मक सहयोग के लिये धन्यवाद करते हुये कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन निरंतर होते रहना चाहिये, जिससे ट्रेड यूनियन के शिक्षक आने वाली अपनी अगली पीढ़ी को शिक्षित कर सके और नेतृत्व क्षमता को बनाये रखे।

कार्यक्रम - 2

टी.यू.सी.सी. कार्यकर्ताओं का जागरूकता प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 12 और 13 जनवरी 2010 को बबलु सेवाश्रम, झरनापाड़ा रोड़, हीरापुर, धनबाद, झारखण्ड में किया गया।

टी.यू.सी.सी. की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य साथी जनार्दन पाण्डेय ने झारखण्ड राज्य कमेटी की ओर से सभी आगन्तुकों का स्वागत किया और कहा कि ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं खासकर झारखण्ड राज्य के लिये इस प्रकार का प्रशिक्षण शिविर का आयोजन एक नया अनुभव है इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलतापूर्वक समापन हेतु भागीदारियों को किसी भी प्रकार की सहायता की आवश्यकता को बताने का अनुरोध किया।

उपस्थित अतिथियों में साथी एस.पी. तिवारी (महासचिव टी.यू.सी.सी.), श्री प्रमोद कुमार गुप्ता (ई.ओ. - सी.बी. डब्ल्यू.ई.), श्री पी.एन. तिवारी (मुख्य प्रशिक्षक - एचआईवी/एड्स, बीसीसीएल), आदि उपस्थित थे, जिन्हें साथी वकील ठाकुर, साथी गुंजामली पटनायक और साथी संतोष कुमार ने फूलों का गुलदस्ता भेंट किया।

साथी एस.पी. तिवारी, महासचिव टी.यू.सी.सी. ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और ग्रामीण क्षेत्रों में ट्रेड यूनियन शिक्षा की आवश्कता पर जोर डालते हुये टी.यू.सी.सी. के कार्यकर्ताओं की अनौपचारिक क्षेत्र (इनफोरमल सैक्टर) में कार्यों का उल्लेख किया। लोगों को उपलब्ध योजनाओं के संबंध में जागरूक करने के लिये जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है उसका उल्लेख किया। प्रशिक्षण सत्र में बिहार, झारखण्ड और उड़ीसा राज्य के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

साथी एस.पी. तिवारी ने अनौपचारिक क्षेत्र के कामगारों को अपने सेहत के प्रति ध्यान सचेत रहने की आवश्यकता पर जोर देते हुये एच.आई.वी. /एड्स से पीड़ित लोगों को समाज में कलंकित तो समझा ही जाता है बल्कि उनके परिवार और स्कूल जाते बच्चों को भी यातना दिया जाता है।

साथी चन्द्रशेखरन ने भागीदारियों को सूचना के अधिकार के कानून की व्याख्या की, उसके प्रयोग और सरकार के छूपे भाग के संबंध में जारी जानकारी दी। अधिकारियों के कार्य और उनके उद्देश्यों के लिये भी यह अधिनियम है। उड़ीसा से कार्यकर्ता इस कार्यक्रम से काफी खुश थे और उन्होंने इच्छा जताई की इस तरह का कार्यक्रम उड़ीसा में हमारे कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिये आयोजित की जाये।

श्रीमती अपर्णा सेनगुप्ता (पूर्व विधायक एवं मंत्री, झारखण्ड सरकार एवं अध्यक्षा टी.यू.सी.सी. झारखण्ड राज्य कमेटी) ने सभी मेहमानों और भागीदारियों को धन्यवाद संबोधन दिया।

ए.आई.एस.बी. का मुजफ्फरपुर में सेमिनार

16 दिसम्बर को मुजफ्फरपुर में ए.आई.एस.बी. ने एक सेमिनार का आयोजन किया जिसका संचालन छात्र नेता नवीन कुमार ने किया।